Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 2, March–2021, (Special Issue), ISSN 2230-7540

लैंगिक समानता ही भविष्य के विश्व की उन्नति और समृद्धि की कुंजी है।

डॉ॰ आबिदा ख़ातून[1]*, डॉ॰ एम॰ ए॰ खान[2]

[1] सहायक प्रवक्ता - राजनीति विज्ञानं विभाग, आर॰ बी॰ डी॰ महिला महाविद्यालय , बिजनौर

[2] एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञानं/ प्राचार्य, कृष्णा इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस ,बिजनौर

सारांश- भारतीय महिलाओं को नए भारत के उभरते परिदृश्य में एक सशक्त हस्तक्षेप के रूप में देखने के पर्याप्त कारण हैं। महिलाओं से जुड़े नियम, कानून, संवैधानिक प्रावधान, मीडिया, सरकार की नीतियां व कार्यक्रम, पंचायतों व विधान सभाओं तथा संसद में उनका प्रतिनिधित्व, जेंडर बजटिंग, जेंडर बजटिंग , उद्यमिता एवं कौशल विकास कार्यक्रम तथा बैंकिंग एवं लघु ऋण योजनाएं, स्व-सहायता समूह और मनरेगा जैसे प्रयास मिल-जुलकर महिलाओं के नए भारत में मददगार बने हैं।उन्हें अपना एक आधुनिक राष्ट्र बनाने में ये सब सहायक सिद्ध हुए हैं। महिलाएं विकासशील देशों में नए प्रवर्तनों की वाहक बनी हैं।

कुँजी - जेंडर बजटिंग , उद्यमिता एवं कौशल विकास ।

---------------------------------X--------------------------------

कभी बेटी बनकर घर को सजाती है, तो कभी माँ बनकर अपने बच्चों का जीवन संवारती है, ज़रुरत पड़ने पर आर्थिक सहयोग करने तथा पुरुष के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने में भी नहीं हिचकिचाती है। मन में करुणा का भाव लिये बड़ी ख़ूबसूरती के साथ अपनी सारी ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए महिला अपने परिवार की धुरी है। आज महिला सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक के साथ ही कला, साहित्य, खेल व विज्ञानं सहित सभी क्षेत्रों में न केवल पुरुषों की बराबरी कर रही है बल्कि कई क्षेत्रों में वह पुरुषों से दो क़दम आगे निकल गयी है।

महिलाओं को शिक्षा देने तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिये जो सुधार आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उससे समाज में एक नयी जागरूकता उत्पन्न हुई है। बाल-विवाह, भ्रूण-हत्या पर सरकार द्वारा रोक लगाने का अथक प्रयास हुआ है । शैक्षणिक गतिशीलता से पारिवारिक जीवन में परिवर्तन हुआ है । गा ाधीजी ने कहा था कि एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा की उपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्यों लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है । शिक्षा ही वह कुंजी है जो जीवन के वह सभी द्वार खोल देती है जो कि आवश्यक रूप से सामाजिक है । शिक्षित महिलाओं को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय होने में बहुत मदद मिली । महिलाएँ अपनी स्थिति व अपने अधिकारों के विषय में सचेत होने लगी । शिक्षा ने उन्हें आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक न्याय तथा पुरूष के साथ समानता के अधिकारों की मा ाग करने को प्रेरित किया ।

भारतीय महिलाओं को नए भारत के उभरते परिदृश्य में एक सशक्त हस्तक्षेप के रूप में देखने के पर्याप्त कारण हैं। महिलाओं से जुड़े नियम, कानून, संवैधानिक प्रावधान, मीडिया, सरकार की नीतियां व कार्यक्रम, पंचायतों व विधान सभाओं तथा संसद में उनका प्रतिनिधित्व, जेंडर बजटिंग, उद्यमिता व कौशल विकास कार्यक्रम तथा बैंकिंग एवं लघु ऋण योजनाएं, स्व-सहायता समूह और मनरेगा जैसे प्रयास मिल-जुलकर महिलाओं के नए भारत में मददगार बने हैं।उन्हें अपना एक आधुनिक राष्ट्र बनाने में ये सब सहायक सिद्ध हुए हैं। महिलाएं विकासशील देशों में नए प्रवर्तनों की वाहक बनी हैं।

17वीं लोकसभा 78 महिला सांसदों के साथ शुरू हुई। जिनमें भारतीय जनता पार्टी की ही अकेले 34 सांसद चुनी गईं, जबकि 724 महिला उम्मीदवार चुनावी समर में उतरी। यह अच्छा संकेत है। सरकारी रिपोर्ट्स बताती हैं कि देश की कुल श्रम शक्ति में ग्रामीण महिलाओं का बड़ा योगदान है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट के अनुसार विश्व के चालीस प्रतिशत से भी अधिक रोजगारों में महिलाएं कार्यरत हैं। प्राप्त अनुभवों के

अनुसार किसी भी उद्यम में महिला पुरुष मिश्रित बोर्ड का परिणाम कई गुना सकारात्मक पड़ता है। अध्ययनों में चौंकाने वाला तथ्य सामने आया है जिसके अनुसार मात्र 10 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी 70 प्रतिशत तक का मुनाफा बढ़ा देती है।

उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान

देश के 6 करोड़ उद्यमियों में मात्र 80 लाख महिलाएं हैं। महिलाओं के द्वारा संभाले जा रहे कारोबार में 83 प्रतिशत लघु उद्योगों का है जो कि लगभग 80 प्रतिशत स्ववित्तपोषित हैं। मात्र 4.4 प्रतिशत ने ही कहीं से ऋण लिया है। महिला उद्यमियों में 60 प्रतिशत वंचित समुदायों से आती हैं। 60 फीसदी कारोबार को एस0सी0/एस0टी0 महिलाएं संभाल रही हैं। हॉलाकि महिला उद्यमिता को मजबूत करने के लिए बहुस्तरीय रणनीति की जरूरत है जिसमें सरकार, वित्तीय संस्थाएं, विशेषज्ञ समूह, व्यवसाय और उद्योग संघ तथा सफल महिला उद्यमियों के अनुभव का लाभ उनकी प्रत्यक्ष साझेदारी के साथ लिया जाए। ताकि उद्यमिता क्षमतावर्धन और जागरूकता तथा कौशल विकास सृजन को उभरती कॉरपोरेट अर्थव्यवस्था का आधार बनाया जाए।

अध्ययनों से एक बात और स्पष्ट हुई है जो सन्तोषपूर्ण भी है कि महिलाओं ने जहां-जहां अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है वहां-वहां लैंगिक असमानता अपने आप कमजोर हुई है। विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा, खेलकूद, मीडिया और मनोरंजन उद्योग में महिलाओं ने जिस तरह अपने आन को स्थापित किया वह लैंगिक असमानता जैसी स्थायी बीमारियों का एकमात्र हल है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि से लेकर मछली पालन, पशुपालन, चाय उद्योग में महिलाओं ने अद्वितीय योगदान दिया है। महिलाओं की श्रम-शक्ति का 90 प्रतिशत हिस्सा मजदूरी और कृषि कार्यों में खप जाता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओर से नौ राज्यों में शोध किया गया जिससे पता चला कि फसल उत्पादन में महिलाओं की हिस्सेदारी 75 प्रतिशत रहती है। बागवानी में 80 प्रतिशत तक और इन सबके निष्पादन कार्यों का 51 प्रतिशत महिलाओं द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

वहीं महिलाएं कृषि के साथ-साथ दूसरे कृषि सहायक कार्यों पशुपालन और मत्स्य आदि और घरेलू कार्यों में जो श्रम करती है, वह अलग है। देश की गरीबी को कम करने में जो एकमात्र बड़ा योगदान है वह भारतीय महिलाओं का है। मनरेगा के आंकड़े भी यही कहानी बयान करते हैं। पुरुषों से कहीं ज्यादा काम महिलाएं कर रही हैं। पशुपालन में 60 प्रतिशत तो मछली पालन में 95 प्रतिशत तक महिला श्रम लगता है।

चुनौतियां

भारतीय संविधान के 74वें संशोधन के साथ महिलाओं को जो भागीदारी राजनीतिक संस्थाओं में मिली उससे बड़े बदलाव समाज में आए। शिक्षा और आर्थिक मजबूती ने निसंदेह महिलाओं को पहचान दी है। किन्तु बिना राजनीतिक पहचान के इसमें स्थायित्व नहीं आएगा। अश्विनी शास्त्री की पुस्तक "भारतीय राजनीति की 50 शिखर महिलाएं" भारतीय महिलाओं के जीवन संघर्ष के साथ ही राजनीति में उनके महान योगदान को बताती है। यह पुस्तक बताती है कि विधायी निकायों में पुरुषों और महिलाओं के संतुलित प्रतिनिधित्व से जटिल सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को प्रभावी तरीके से हल किया जा सकता है। अब दुनिया को यह समझ आने लगा है कि किसी देश की स्थिति वहां की महिलाओं की सामाजिक स्थिति से बनती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी **सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों** के क्रम में जो **सतत विकास लक्ष्य-5** उल्लेखित किया है वह इसीलिए कि बिना महिलाओं की सहभागिता के दुनिया विकास नहीं कर सकती है। यदि कोई भी राष्ट्र सही दिशा में संतुलित और सतत् विकास चाहता है तो लैंगिक असमानता को दूर करना ही होगा। दुनिया के देशों में महिलाओं की स्थिति ही भविष्य के विश्व की उन्नति और समृद्धि तय करेगी। भारतीय महिलाओं ने अपनी दुनिया अपने संघर्षों के बल पर बनाई है।

नई सदी की नई भारतीय नारी ने जिस नई सोच, नई नैतिकता, नए मूल्यों, नए प्रतिमानों, कीर्तिमानों और नए क्षैतिजों के साथ नये भारत का सपना देखा है वह एक सशक्त, समरस, शांति और न्यायपूर्ण भारत होगा जिसकी उम्मीद विश्व समाज को हमसे है।

सन्दर्भ स्रोत

1. डॉ० संजीव महाजन, भारतीय समाज।

2. प्रकाश नारायण नाटाणी - भारत में कन्या भ्रूण हत्या एवं महिलाओं के प्रति घरेलु हिंसा।

3. दैनिक अमर उजाला - 08 मार्च ,2022

Corresponding Author

डॉ॰ आबिदा ख़ातून*

सहायक प्रवक्ता - राजनीति विज्ञानं विभाग, आर॰ बी॰ डी॰
महिला महाविद्यालय , बिजनौर